[Radhwani et. al., Vol.6 (Iss.5): May 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Apr 21, 2018 - Accepted: May 26, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1254133

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

मन्नू भंडारी की कहानियों में विवाहित महिलाओं के संघर्ष

कु. कांता राधवानी [1], डॉ. नीता सिंह [2]
[1] सहायक शिक्षिका (हिंदी), हरक्रिशन पब्लिक स्कूल, बेजनबाग, नागपुर
[2] अध्यक्ष (हिंदी विभाग), श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय, उमरेड रोड, नागपुर

सारांश
मन्नू भंडारी स्वातंत्रोत्तर काल की समाजधर्मी लेखिका हैं। समाज में आने वाले स्थूल और सूक्ष्म परिवर्तनों को सही धरातल पर पकड़ने की अपूर्व क्षमता उनकी लेखनी में है। परिवर्तनों का प्रभाव सदा ही दोहरा होता है – बाह्य और आतंरिक। एक प्रभाव व्यक्ति को अंदर से कुरेदता है तो दूसरा समाज जीवन को खोखला बना देने में बराबर सहयोग पहुँचाता है। लेखिका ने दांपत्य–जीवन की समस्याओं को दोहरे स्तर पर उठाया है, उन्होंने अपनी कहानी में नारी–पुरुष परंपरागत स्थूल संबंध में बदलते संबंध की सूक्ष्म प्रक्रिया का चित्रण किया है। मन्नू भंडारी नारी जीवन में पुरुष के साथ को अनिवार्य मानती है लेकिन वह पति की अंधनुगामी नहीं है और न ही गृहिणी के दायित्व का निर्वाह करने वाली काम चलाऊ, मशीन मात्र। अपने सिद्धांतों, आदर्शों की पूर्ति के लिए वे राजनीतिक जीवन में भी पति की प्रतिद्वंदिता करती है और पति से अलगाव महसूस होने पर विवाह–विच्छेद या पुनर्विवाह भी करती है। मन्नू भंडारी अपनी कहानी में नारी के विविध स्वरूपों को रचकर उसके आधुनिक नारी को पूरी सहजता और संजीदगी के साथ उकेरती है, न की परंपराओं से दबी, कुचली और गुलामी का भार ढोती हुई नारी के रूप में।

मुख्य शब्द – विवाहित महिलाएँ, संघर्ष, दांपत्य–जीवन, नारी विवषता

Cite This Article: कु. कांता राधवानी, डॉ. नीता सिंह. (2018). "मन्नू भंडारी की कहानियों में विवाहित महिलाओं के संघर्ष." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 6(5), 54-58. https://doi.org/10.5281/zenodo.1254133.

प्रस्तावना

हमारी भारतीय संस्कृति में नारी का अपने पति के प्रति समर्पणशील एवं निष्ठावान बने रहना पहला धर्म है। इस आधुनिक युग में भी यह धारणा पूर्ण रूप से नहीं बदली है। आज भी अपनी संस्कृति से जुड़ी रहने के कारण सारी विपरीत परिस्थितियों से समझौता करना भारतीय नारी की नियति बन जाती है। आत्मनिर्भर नारी होने के बावजूद भी नारी अपने पति के समक्ष आवश्यकतानुसार अपनी महत्वकांक्षाओं का गला घोंट देती है। भारतीय नारी को बचपन से ही पति की खुशी में ही अपनी खुशी खोजने के संस्कार दिए जाते हैं जिसके कारण इस रूढ़िवादी बात को कायम रखने के लिए उसे कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। दांपत्य–जीवन का आधार आपसी विश्वास है। यह नष्ट होने से जीवन अभिशप्त हो जाता है। सुखी दांपत्य–जीवन के लिए एक–दूसरे को समझने की वृत्ति और सहानभूति की दृष्टि चाहिए, भले ही उनका विवाह परस्पर आकर्षण से हुआ हो। मन्नू भंडारी की कहानियो में उनकी दृष्टि आधुनिक यथार्थपरक दूरगामी रही है। उनकी लेखनी से दांपत्य–जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं रहा जिसपर उन्होंने बारीकी

[Radhwani et. al., Vol.6 (Iss.5): May 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Apr 21, 2018 - Accepted: May 26, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1254133

से विचार व्यक्त न किया हो। मन्नू भंडारी की कहानियों में परंपरागत बँधे हुए दांपत्य–जीवन शैली का चित्रण न होकर परिस्थितिजन्य यथार्थ का आग्रह सर्वत्र दिखाई देता है।

भूमिका :–

दांपत्य संबंध मानव जीवन की आवश्यकता है, इसके बिना मनुष्य संपूर्ण को प्राप्त नहीं कर सकता। किन्तु दांपत्य जीवन का निर्वाह भी एक कला है जो सीखनी पड़ती है। मानव जीवन की मूलभूत आवष्यकता होने के नाते दांपत्य जीवन को नकारा नहीं जा सकता लेकिन उसमें होने वाले भद्देपन और शोषण को बर्दाश्त भी नहीं किया जाना चाहिए। लेखिका की कहानियों में यही स्तर ध्वनित भी होते हैं। परस्पर विश्वास, सम्मान, समानधर्मिता, तन–मन का सामंजस्य, पारस्परिक सौहार्द्र, यौन तृप्ति आदि आवश्यक तत्व हैं जो दांपत्य जीवन में मधुरिमा बनाये रखते हैं। सुखद एवं मधुर दांपत्य जीवन स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है। मन्नूजी की कहानियों में दांपत्य जीवन में पति–पत्नी के बीच उत्पन्न होने वाले कई तरह के तनावों को उभारा गया है। एक छत के नीचे रहकर भी पति–पत्नी के जीवन में बहुत दूरियाँ आ जाती हैं, जो स्नेह की ऊष्मा को नष्ट करके दांपत्य जीवन की नीरस एवं बोझिल बना देती हैं। इस बात पर लेखिका ने अपनी कहानियों में विषेष रूप से ध्यान दिया हैं।

मन्नू भंडारी की कहानियों में संघर्षरत नारी पात्र :–

मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'कमरे कमरा और कमरे' कहानी की नायिका 'नीलिमा' की स्थिति का चित्रण करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि वह एक होनहार, प्रतिभासंपन्न प्राध्यापिका है। पारिवारिक जिम्मेदारियों और पति की प्रतिष्ठा के कारण वह नौकरो छोड़ देती है। पति श्रीनिवास बड़ी चतिरई से ऐसा माहौल पैदा करता है कि पत्नी नीलिमा के मन में उसके लिए शक पैदा न हो, उल्टा उसे यही लगता रहे कि उसका पति जो कुछ कर रहा है वह परिवार के हित में है। धीरे–धीरे श्रीनिवास, नीलिमा को अपने व्यवसाय से जोड़ लेता है। नीलिमा, पति के व्यवसाय में इतना व्यस्त हो जाती है कि उसे अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व का भी बोध नहीं रहता। पति उसकी प्रतिभा को स्वार्थवश व्यवसाय की ओर मोड़कर बिलकुल अपाहिज बना देता है। धीरे–धीरे नीलिमा व्यवसाय की व्यस्तता से ऊबने लगती है। उसकी प्रतिभा अपने अधूरे सृजन को पूर्ण करने के लिए मचलने लगती है। लेकिन पति श्रीनिवास चालाकी के साथ प्रसन्न होकर कारोबार की अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपते हुए कहता है – ''नीलू तुम्हारे बाबू ठीक ही कहते थे। जब से तुम आई हो मैं धूल भी हाथ में लेता हूँ तो सोना हो जाती है।''[१] न चाहते हुए भी नीलिमा पति के इच्छा के आगे अपने सपनों का गला घोंट देती है और पति के आगे समर्पण कर देती है।

'नशा' कहानी की नारी 'आनंदी' पतिव्रता, निष्ठावान नारी है। जो पति की क्रूरता, यातना, आक्रोश के बावजूद भी समर्पणशील बनी रहती है। पति शराबी है, अधिक शराब सेवन की लत ने उसे अमानवीय बना दिया है, जो अपने समस्त कर्तव्यों को भूलकर बेटे और पत्नी को बेरहमी से पीटता है। जुल्मी पति के साथ रहनेवाली आनंदी उसके जुल्मों से मुक्त होने के लिए छटपटाती है। पति की मार और अमानवीय व्यवहार से टूटी हुई आनंदी, बारह वर्ष बाद विवाहित होकर घर आए पुत्र से विवश होकर कहती है – ''मुझे यहाँ से ले चल, किषनू......यहाँ से ले चल। मैं अब एक दिन भी इस घर में रहना नहीं चाहती। मैंने बहुत सहा है, अब कर नहीं सहा जाता, मुझे यहाँ से ले चल आज ही।''[२] पति की यातनाओं से परेशान होकर बेटे के पास चली जाने के बाद भी पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए अपने पति को बहू–बेटे से छिपकर बीस रुपये का मनीआर्डर भेजती है।

'नई नौकरी' की 'रमा' आत्मनिर्भर नारी होने के बावजूद अपने ऐसे पति के समक्ष अपनी इच्छाओं को दबा देती है जो अपने स्वार्थ के लिए पत्नी का भावनात्मक शोषण करता है। रमा इतिहास की प्राध्यापिका है, पत्नी के अलावा भी उसका व्यक्तित्व, अस्तित्व है, उसकी स्वयं की अलग पहचान है। लेकिन पति कुंदन की

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Apr 21, 2018 - Accepted: May 26, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1254133

महत्वाकांक्षा और अधिकार पत्नी के अलग व्यक्तित्व का समर्पण चाहने लगते है। रमा पति की महत्वाकांक्षा और अधिकार के सामने सहज ही घुटने टेक देती है। पति द्वारा घर को सजाने, सँवारने कि जिम्मेदारी सौंप देने के कारण वह अध्यापन कार्य को सही ढंग से नहीं निभा पाती। अपने कार्य के असंतोष के कारण वह एक दिन पति के समक्ष इस्तीफा देने की बात करती है। यह सुनकर कुंदन बहुत खुश होकर कहता है – ''छोड़ो भी यार, वैसे भी क्या रखा है एंषिअंट हिस्ट्री पढ़ने में। चोलवंश, चेदीवंश के बारे में न भी जानेंगे तो कौनसी जिंदगी हराम हो जाएगी। .... मेरा संतोष, तुम्हारा संतोष नहीं है, मेरी तरक्की, तुम्हारी तरक्की नहीं है ?''(३) वास्तव में कुंदन अपनी पत्नी को साधन बनाकर अपनी प्रतिष्ठा और ऊँची करना चाहता है। उसे एक ऐसी पत्नी चाहिए जो शिक्षित और खूबसूरत होने के साथ सोशल भी हो ताकि वह अपने बॉस और मित्र को घर बुलाकर खुश कर सके। दांपत्य जीवन में पति द्वारा पत्नी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की उपेक्षा पति–पत्नी के संबंध की मधुरिमा नष्ट कर वहाँ असंतोष की भावना पैदा करती है।

'दरार भरने की दरार' कहानी की नारी 'श्रुति' आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी है वह प्रसिद्ध चित्रकार है। श्रुति के पति विभु ऊँचे ओहदे पर है। सो आर्थिक कष्ट का प्रश्न ही नहीं है। प्रश्न तो एक दूसरे को समझने का है। श्रुति और विभु के बीच अह्म का टकराव है। इस टकराव से उत्पन्न तनाव के कारण श्रुति पति से अलग रहने का निर्णय करती है – ''बहुत दिनों के संघर्ष और द्वंद्व के बाद आखिर मैंने अंतिम रूप से निर्णय ले ही लिया है कि मैं अब अलग ही रहूँगी और सच कहती हूँ निर्णय लेने के बाद से ही जैसे मैं हलकी हो गई हूँ, एक तनाव से मुक्त हो गई हूँ।''(४) पत्नी के इस निर्णय का पति पर कोई खास फर्क नहीं पड़ता है। वह अपनी चतुराई और निपुणता से स्नेहमयी श्रुति को अपनी बातों के जाल में उलझाकर बिखरते दांपत्य जीवन को समेट लेता है। श्रुति का निर्णय स्थाई रूप ग्रहण नहीं कर पाता क्योंकि दांपत्य संबंध तोड़ना न इतना आसान है और न उचित। निर्णय लेना बहुत आसान है पर उसे अमल में लाना बहुत कठिन है। श्रुति का पति के साथ रहना भारतीय नारी की विवशता है।

'नकली हीरे' कहानी में 'सरन' और 'इंदु' दो बहनें हैं। दोनों बहनों का दांपत्य जीवन एक–दूसरे से विपरीत है। सरन अपने पति से खुश नहीं है। उसका पति अर्थ सम्पन्न एवं भोग–विलास की वृत्ति वाला है। जिसके कारण सरन भावनात्मक प्रेम के स्तर पर परित्यक्ता ही रहती है। पति प्रेम से वंचित सरन अपनी बहन इंदु के सुखी दांपत्य जीवन को देखकर जल–भुन जाती है। इंदु के कहने पर सरन, पति से बात करने के लिए ट्रंक बुक करा लेती है। रात के बारह बजे के करीब ट्रंक की लाइन मिलती है, लाइन पर सेवक रामसिंह से सरन को पता चलता है कि उसका पति किसी और स्त्री के साथ पार्टी में गया है। यह सुनकर उसे अपने खोखले प्रेम, बाहरी सुख और यथार्थ का आभास होने लगता है लेकिन इंदु के सामने वह नकली मुस्कान ओढ़कर अपनी व्यथा प्रकट नहीं होने देती। पर एक हलकी–सी सर्द आह उसके मुख से निकल जाती है। वास्तविकता तो यही है कि सरन के पास भौतिक सुखों के सब साधन होते हुए भी वह पति प्रेम के लिए प्यासी ही रहती है – ''इन हीरों में तो चमक ही नहीं, ये तो नकली है। कल जोहरी उसके साथ धोखा कर गया। इतना विश्वास का जोहरी और धोखा।''(५) सरन जैसा सम्पत्य जीवन नारी को घर की चारदीवारी में दमित और कुंठित जीवन जीने को विवश करता है।

'कील और कसक' कहानी की नायिका 'रानी' के दांपत्य जीवन में पति की उपेक्षा के कारण भावात्मक स्तर पर अलगाव है। दांपत्य जीवन का सबसे मुख्य पक्ष काम–जीवन है। रानी दांपत्य जीवन के इस पक्ष से ही वंचित रहती है क्योंकि आर्थिक चिंताओं से ग्रस्त पति कैलाश उसकी ओर काम ध्यान देकर ऋण से पीछा छुड़ाने के लिए रात–दिन प्रेस में काम करता रहता है। कर्ज से मुक्ति पाने के लिए वह अपनी पत्नी कि यौवन सुलभ भावनाओं एवं इच्छाओं को भूल जाता है। सुहागरात की कल्पना रानी के तन–मन में सिहरन पैदा करके उसके सौंदर्य को निखार देती है। वह पति का बड़ी अधीर होकर इंतजार करती है। लेकिन कैलाश ''रानी के अस्तित्व को भूलकर सो गया। रानी को लगा वह अपने पास सोए उस आदमी का मुँह नोच ले, अपने बाल नोच ले, फूट–फूटकर रो पड़े और आँसुओं से सारे घर को और नीचे ही निरंतर धड़–धड़ करने वाले इस प्रेस को डुबो दे।''(६) रानी के सारे स्वप्न फूलों की तरह झड़ जाते हैं। अपने नीरस

जीवन से तपती रानी अपनी दमित भावनाओं की अभिव्यक्ति का मार्ग खोज लेती है। उसका मन घर में रहा रहे पेइंग गेस्ट शेखर की ओर आकर्षित होता है – ''शेखर को देखकर उसका मन कैसा–कैसा होने लगता. ...... धीरे–धीरे कब रानी का घूँघट खुल गया और खाने की प्रशंसा, रूप की प्रशंसा में बदलकर उसके अतृप्त मन को तृप्त करने लगी।''[७] लेकिन शेखर के विवाहोपरांत स्थिति बदल जाती है, उसके रहे–सही सपने भी टूट जाते हैं और वह ईर्ष्यालु और झगड़ालु बन जाती है। पति द्वारा उपेक्षा रानी सह नहीं पाती और कैलाश स्वयं को रानी के अनुकूल बना नहीं पाता। परिणामस्वरूप घर में कलेश, असंतोष और तनाव की स्थिति बन जाती है और अंततः रानी का दांपत्य जीवन कष्ट में गुजरता है।

'शायद' कहानी की नारी 'माला' तीन साल बाद पति राखाल के घर आने पर आनंदित और उत्साहित महसूस नहीं करती। घर ग्रहस्थी का भार उठाते हुए वह बिलकुल टूट चुकी है। आर्थिक तंग हालत में माला की सारी संवेदना और भावनाओं पर तुषारपात किया है। आर्थिक तंग हालत से दुखी माला अपने मन की व्यथा पति के समक्ष प्रकट करती है – ''मुझे तो दो साल काटना ही इतना भरी पड़ता था, इस बार तुमने पूरे तीन साल लगा दिए। पूजा पर कितनी–कितनी राह देखी बेचारे बच्चों को एक नया कपड़ा तक नहीं दिलवा सकी। दादा की बिजली की दुकान खूब अच्छी चलने लगी है, सो यहाँ लाइट तो जरूर लगवा दी, पर इतना नहीं हुआ कि बहन के बच्चों को एक–एक कपड़ा ही दिलवा देते। टुकुर–टुकुर मेरे बच्चे दूसरों के घरों में ताकते रहे।''[८] ग्रहस्थी की आर्थिक परेशानी ने माला के नारीत्व की संवेदना छीन ली है। पति द्वारा हाथ दबाने पर वह कोई प्रतिक्रिया, कोई हरकत नहीं करती। यह एक ऐसा क्षण है जब लंबे समय के बाद मिले पति–पत्नी उत्साह और उष्णता से भर जाते हैं। लेकिन माला का हाथ सर्द और निर्जीव रहता है। उसमे नारी के रूप में बचा ही क्या है ? यथार्थ की पथरीली डगर ने उसका सब कुछ छीन लिया है। समय की मार के निशान ने माला को समय से पहले ही बूढ़ा बना दिया है। अतः आर्थिक परेशानियों से त्रस्त माला, भावना और शारीरिक दोनों स्तरों पर पति से दूर हो गई है। माला के दांपत्य जीवन में कोई मिठास नहीं है। अर्थाभाव दांपत्य जीवन में पति–पत्नी को एक–दूसरे से कटकर घनीभूत अकेलेपन की पीड़ा देता है। ऐसे दांपत्य जीवन में माला किस प्रकार जीती है यह वह खुद ही महसूस करती है। उसकी नारी सुलभ सहनशीलता तथा वात्सल्य ही है जो इस बोझिल दांपत्य जीवन के जहाज को खींचने में उसकी मदद करता है।

निष्कर्ष :–

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियो में स्पष्ट किया है कि दांपत्य जीवन में पति अपनी आकांक्षाओं एवं स्वार्थ की पूर्ति के लिए पत्नी का साथ तो चाहता है पर उसकी इच्छाओं और भावनाओं की उपेक्षा करता है। विडंबना है कि आधुनिक शिक्षित नारियाँ भी अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व को दरकिनार करती हुई झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम को पोषते हुए पति की इस चाल को समझ नहीं पाती और स्वयं को सबसे अलग पाकर अंदर ही अंदर छटपटाती रहती है। लेखिका ने इन कहानियों में पुरुष की स्वार्थी प्रवृत्ति और भारतीय संस्कारों में जीने वाली नरियों की कमजोरी का संकेत किया है। मन्नू भंडारी खंडित दांपत्य जीवन का चित्रण करती है, कहानी में वह आधुनिक नारी की मुक्तियात्रा के उस छोर का संकेत करती है जहाँ पहुँचकर उसे मजबूरन पारंपरिक पुरुष–प्रधान व्यवस्था के प्रति समर्पित हो जाना पड़ता है। वह न तो अपनी पिछली जिंदगी छोड़ पाती है और न ही अपनी चुनी हुई जिंदगी को सही ढंग से भोग पाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

१ मन्नू भंडारी, कमरे कमरा और कमरे (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : २६६.
२ मन्नू भंडारी, नशा (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : १६६.
३ मन्नू भंडारी, नई नौकरी (मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ), नेषनल बुक ट्रस्ट इंडिया,

[Radhwani et. al., Vol.6 (Iss.5): May 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Apr 21, 2018 - Accepted: May 26, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1254133

२००५, पृष्ठ : ३६३.

४ मन्नू भंडारी, दरार भरने की दरार (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : ३६६.
५ मन्नू भंडारी, नकली हीरे (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : १६०.
६ मन्नू भंडारी, कील और कसक (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : ६१.
७ मन्नू भंडारी, कील और कसक (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : ६३.
८ मन्नू भंडारी, शायद (मेरी कहानियाँ), पृष्ठ : ४२३.